मेरानो (इटली)
नवम्बर ०७, २००२

सन्देश संख्या ५१

जीवन जीने के सम्बन्ध में पच्चीस अमूल्य अवतरण

१. जीवन जीने के लिए है न कि चाहने–पाने के चक्कर में घिसटने के लिए।
२. जीवन अस्तित्व में होने के लिए है न कि बनावटीपन एवं मतान्धता से उत्पन्न संघर्ष के लिए।
३. जीवन ध्यान के लिए है न कि चाहने एवं चालबाजी के लिए।
४. जीवन चित्तवृत्ति एवम् अहंभाव से मुक्ति के लिए है न कि भ्रान्ति, छल–कपट, बुद्धि–विकार, मगज–धुलाई एवं कट्टरपन के लिए।
५. जीवन प्रबोध एवम् आनन्दमय अस्तित्व के लिए है न कि उत्तेजनापूर्ण आमोद के लिए।
६. जीवन अनासक्त अस्तित्व के लिए है न कि अनेक प्रकार की जंजीरों, विखण्डन, हठधर्मिता एवं रूढ़िवादिता के लिए।
७. जीवन सात्विकता और उदारता के लिए है न कि आत्मतुष्टि, आत्मपुष्टि एवम् अन्धविश्वास प्रवणता के लिए।
८. जीवन पूर्णता, पवित्रता और प्रसन्नता के लिए है न कि धोखाधड़ी, छल–कपट और पाखण्ड के लिए।
६. जीवन अन्तर्दृष्टि एवम् अन्तर्मुखी यात्रा के लिए है न कि बहिर्मुखी धारणाओं, प्रभावों, अवरोधों और जकड़ी हुई प्रवृत्तियों के लिए।
१०. जीवन अन्तरानन्द के लिए है न कि सारहीन बकवास एवं बेचैनी के लिए।
११. जीवन अनुकम्पा एवम् आत्मीयता के लिए है न कि आघात और ध्वंस के लिए।
१२. जीवन ध्यानमय जागरूकता के लिए है न कि मिथ्या कल्पनाओं, शरारतों एवम् उन्मत्तता के लिए।
१३. जीवन 'निर्मन' दृष्टि है न कि विचार और इसकी ठगी के जंजाल में फँसना।
१४. जीवन द्रष्टाविहीन दृष्टि है न कि अहंकेन्द्र में संलिप्तता।
१५. जीवन गहन प्रत्यक्षबोध के लिए है न कि उलझनों, उलटी धारणाओं और उन्मत्त विकृतियों के लिए।
१६. जीवन आध्यात्मिक जिज्ञासा के लिए है न कि घिसी–पिटी पूछताछ के लिए।
१७. जीवन हर प्रकार की झूठी खोजों की वर्जना है न कि और अधिक पाने की ललक।
१८. जीवन संतुलन के लिए है न कि पापात्मा या पुण्यात्मा बनने के लिए।
१६. जीवन सत्य, शान्ति और समाधि के लिए है न कि कपट, तनाव और अशान्ति के लिए।
२०. जीवन अनाम–अस्तित्व की समझदारी के लिए है न कि सांस्कृतिक अनुबन्धन के उभार के लिए।
२१. जीवन तेजस्विता एवं सद्‌गुणों के लिए है न कि निहित स्वार्थजनित मिथ्याभिमान एवम् अशिष्टता के लिए।
२२. जीवन निष्कपटता की प्रज्ञा के लिए है न कि अज्ञान की अभिव्यक्ति के लिए।
२३. जीवन समाधि और सुख–बोध के लिए है न कि अपेक्षाओं और अहंकार के पोषण के लिए।
२४. जीवन योगक्रिया के लिए है न कि अहंभाव की पुष्टि के लिए।
२५. जीवन स्वार्थपरता के परिसमापन के लिए है न कि आत्म–विवर्धन के उत्साहपूर्ण अध्यवसाय के लिए।

।। महिमामय स्वाध्याय ।।